# आग राग गाता मदमाता आया फागुन

आसमान का रंग बदला और धरती खिलखिला उठी। ऋतु ने अंगड़ाई ली, प्रकृति मुस्कुराई। धूप थोड़ी तपी तो ढेरों फूल खिले। कूक-कूक कर हूक उठाती कोयल की पंचम तान प्राणों को सुलगाती अंग-अंग में आग जगाने लगी। दबी आग किस अनुराग से जगती है यह बसंत को पता है। बाग-बगीचों में, दूर सुदूर खेतों में, नदी तालाब के कूल कछारों में, हरे-हरे पत्तों, डालियों और रंग-बिरंगे फूलों की नरम-नरम पंखुड़ियों पर कोमल मुलायम मखमली आग तैरने लगी -
तन मन यौवन जल रहा,जले फाग की आग।
जमकर आज दिगंत में, गुंजे आग का राग।।'



संजय पंकज
वरिष्ठ लेखक

दिग्वधुओं ने अपने घूंघट उठा लिए। लाज के अंदाज बदल गए। पेड़ों ने साज संभाला। लताओं ने पाजेब पहन ली। जीवंतता से भर गया जर्रा जर्रा। जड़ में चैतन्य क्या उतरा कि कंकड़ कंकड़ में शिवशंकर नाच उठे। भूत-प्रेत-बैताल भी साज सज्जा में सुसज्जित हो रंग गुलाल उड़ाने लगे। बाबा बौड़म अघोरेश्वर देवाधिदेव महादेव आशुतोष भूत भावन भोलेनाथ बारात लेकर निकल पड़े। वसंत का राग-अनुराग शिव की बारात में रंग-गंध की तरंग लिए जा घुसा। रागी-विरागी योगेश्वर शिव लय के आरोह-अवरोह से पोर-पोर झंकृत हुए, तो उनके पांवों में थिरकन उतर आई और वे उमंग में लगे नाचने। वसंत ने अनंत शिव में असीम ऊर्जा का संचार किया तो वे नटराज हो गए और जब वसंत ने उन्हें मदन-रूप में उन्मत्त करना चाहा तो रौद्र रूद्र बनकर, उन्होंने प्रलयंकारी तांडव का धमाल मचाया। वसंत छंद बनकर कंठहार होता है, तो बेतरतीब होकर अंगार भर रह जाता है। लास्य और तांडव का संतुलन है वसंत। सलीके से वसंत को संभाल लेने का उन्नत अवसर महाशिवरात्रि है। महाशिवरात्रि शिव-शक्ति के महामिलन का विराट आध्यात्मिक पर्व है।

वसंत फागुन की अगवानी करता हर दिशा में दमक रहा है। रंग-तरंगों पर मंद-मंद लहराती मलय बयार, टेसू के फूलों से फूटती लाल-लाल बौछार, पिक पंचम की उल्लसित ज्वार। ऐसे में भला कैसे न झरना हुआ मन सागर हो जाए। पूरा का पूरा वासंती परिवेश है। खुशबू से भरी झूमती हवाएं, बहकती हुई दिशाएं। आम पर बौर लद गए, पीपल के पत्तों में चमक बढ़ गई। गेहूं की बालियां निखरने लगीं, महुए की मादकता बिखरने लगीं। बलखाती लहराती नदियों को सूरज की किरणों ने चूमा तो वह लहर-लहर पर चमक उछालती कौंधने लगीं। अपने आप ही सबकी चाल बहकी, हर गाल बिना गुलाल मले ही गुलाबी हो गए, अनजाने ही मद में पद डगमग-डगमग होने लगे। आसमान मदहोश मुस्कुराहटों से धरती को निहारने लगा तो धरती भी निहाल हुई और सरसों के पीले फूलों की पिचकारियां मारने लगी। उड़ने लगी बहुरंगी तितलियां, मचलने लगे भौंरे, गाने लगी चिड़ियां। अंग अंग में तैरने लगा सुरीला नशा, पूरे वातावरण में फैल गया सुरूर और मृदुल गुदगुदाहटों से मादक हो उठा अंतरिक्ष। आक्षितिज आलोड़ित होने लगा अनकहे आस्वाद का अद्भुत आलोक। ऐसा आलोक जिसमें अदृश्य है रंग ही रंग, गंध ही गंध, संगीत ही संगीत। कुछ भी अछूता नहीं रहा। जड़ चेतन सब स्पंदित उद्वेलित हो उठे। लय की लहरियों पर तरंगित होता हुआ प्रेम पुलकित पैंगें मारता फागुन आ गया। -

'फागुन ने अंकित किया,प्यार प्यार बस प्यार।
प्यार नाम है जिंदगी, प्यार धरा का हार।।'

शिव-शक्ति को संयोजित करता वसंत रंग गंध की पालकी उठाए फागुन का अलख जगाने लगा। 'नव गति नव लय ताल छंद नव'







पर जब सब मदहोश होने लगे तो फागुन ने कोयल-स्वर में मधुर शोर मचाना शुरू किया। तब भी मदहोशी नहीं टूटी, तो फागुन ने पेड़ों पर मंजरियों की आग जला दी। टेसू और पलाश के फूल दहक उठे। फागुन ने आग की लपटें उठाई तो आकुल आह्लाद के उन्मादी स्फुलिंग उड़ने लगे। फागुन के अग्नि-अंक में समाहित होने लगा अस्तित्व। कुटिलता की होलिका जलकर राख हो गई और आह्लाद का प्रह्लाद अलौकिक रंग-गंध में डूबकर उबर आया। आह्लाद, आनंद और आत्मीयता का फागुनोत्सव परम सत्ता को भी ऐसा छू गया कि दिगंबर शिव मसान में ही मगन मस्त हो खेलने लगे होली। वसंत की मादकता और फागुनी उल्लास से उन्मादित हुआ कामदेव तो उसने दिगंबर शिव पर ही संधान कर दिया अपना मदन-बाण। काम के बाण से विद्ध हो शिव उन्मत्त नहीं हुए उद्धत हुए और लगे क्रोध में नाचने। ब्रह्मांड के सबसे बड़े प्रेमी शिव। उन्होंने अपने प्रेम की अक्षुण्णता और अखंडता के लिए काम को भस्म कर दिया। एक दूसरे में अंतर्भुक्त शिव और शक्ति काम रहित कामजित हैं। वसंत और फागुन कामोद्वेलन के समस्त द्वंद्वों से परे कामोद्दीपक अलौकिक ऊर्जा हैं। फागुन की मस्ती होली के रूप में व्यक्त होती है। भारतीय समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा में योगीराज शिव और योगेश्वर कृष्ण में सन्निहित फागुनोत्सव के असीम प्रवाह और अनंत उल्लास के दर्शन हमारे चित्त की निर्मलता और भाव के औदात्य के परिचायक हैं। शिव और कृष्ण दोनों प्रेमी हैं। असीम, अनंत, अटूट, अखंड, अछोर और अनीह है दोनों का प्रेम। प्रेम की पराकाष्ठा और दिव्यता में डूबे शिव और कृष्ण शाश्वत हैं। शाश्वत है वसंत और शाश्वत है फागुन भी। -

' प्रेम अनोखा रंग है , प्रेम अनोखा छंद।
फागुन ने चिल्ला कहा,इसको दिया अनंत।।

अहर्निश अनंत राग गाता अंबर और धरती के बीच अनुराग से भरा हुआ जो शून्य है वह अनछुआ, अनदेखा, अनकहा और अलौकिक है। जाने कब से सौंदर्य का अदृश्य सागर लगातार लहरा रहा है धरती और अंबर के बीच। धरती और अंबर के बीच ही जीवन और मरण का महारास चलता रहता है। यह शून्य ही ब्रह्म और जीव का सम्मोहक क्रीडा स्थल है। माया का खेल चल रहा है निरंतर। रंग और गंध का आनंद उत्सव मनाता आग राग गाता मदमाता फागुन आया है। फागुन के आते ही आए हैं अनेकानेक भाव विभाव अनुभाव। आई हैं अंतश्चेतना में अनंत अनुभूतियां।

वसंत और फागुन को अंतर में समाहित कर हम प्रार्थना करें कि इन अनुभूतियों की आग में असीम करुणा समाहित हो और राग अनुराग की ऐसी लय संपूर्ण विश्व में फैल जाए, जिसमें सब रंग-गंध के प्रेमपुलक में डूब एकरस एकतान हो जाएं। कोई किसी से विलग नहीं हो और फाग-आग के राग में ऐसे लहराएं कि एक दूसरे के अस्तित्व को कोई विलग भी नहीं कर सके। फागुन का संदेश है कि हम शुद्धआत्मा प्रबुद्ध बनें और हर युद्ध के विरुद्ध करुणा का ध्वजारोहण करें।

'होली में सबको मिले, हंसी-खुशी सौगात।
सराबोर दिन रंग में, गंध भरी हो रात।।

---

सक्सेस स्टोरी

# कल्पना सरोज : झोपड़ी से उद्योगपति तक

कल्पना सरोज भारत की एक प्रेरणादायक महिला उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने गरीबी, जातिगत भेदभाव और व्यक्तिगत संघर्षों से उबरकर एक सफल व्यवसाय साम्राज्य स्थापित किया है। वे कमानी ट्यूब्स की चेयरपर्सन हैं और उनकी कुल संपत्ति लगभग 112 मिलियन डॉलर आंकी जाती है। उनकी कहानी को अक्सर 'स्लमडॉग मिलियनेयर' की वास्तविक संस्करण के रूप में वर्णित किया जाता है।

## प्रारंभिक जीवन

कल्पना सरोज का जन्म 1960 के दशक की शुरुआत में महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव रोपरखेड़ा में एक दलित परिवार में हुआ था। उनके पिता पुलिस कांस्टेबल थे और परिवार गरीबी और जातिगत भेदभाव से जूझता था। गांव में लड़कियों की शिक्षा पर प्रतिबंध था, लेकिन उनके पिता ने उन्हें स्थानीय स्कूल में दाखिला दिलाया, जहां वे पढ़ाई में उत्कृष्ट रहीं। हालांकि, दलित होने के कारण उन्हें स्कूल में भेदभाव का सामना करना पड़ाकृवे स्कूल के कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं ले सकती थीं, और अन्य बच्चों के माता-पिता उन्हें अलग रखते थे।



रूफिया खान
शिक्षिका

## विवाह और शुरुआती संघर्ष

उस समय ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह आम था, और लड़कियों को परिवार का बोझ माना जाता था। मात्र 12 वर्ष की उम्र में कल्पना का विवाह कर दिया गया। वे मुंबई के एक स्लम में पति और ससुराल वालों के साथ रहने लगीं, जहां उन्हें शारीरिक और मानसिक यातनाएं सहनी पड़ीं। वे भूखी रखी जातीं, पीटी जातीं और नौकरानी से भी बदतर व्यवहार किया जाता। छह महीने बाद, उनके पिता ने उन्हें पहचानकर वापस घर ले आए और विवाह समाप्त कर दिया। लेकिन गांव में वापस आने पर उन्हें और उनके परिवार को ताने और अपमान सहने पड़े। हताश होकर उन्होंने तीन बोतल कीटनाशक पीकर आत्महत्या का प्रयास किया, लेकिन परिवार ने उन्हें बचा लिया।

## मुंबई में नई शुरुआत

गांव में नौकरी के अवसर न होने पर, कल्पना ने माता-पिता को मनाकर मुंबई में चाचा के घर जाने की अनुमति ली। वहां उन्होंने एक गारमेंट फैक्ट्री में काम शुरू किया, जहां उन्हें महीने में 60 रुपये मिलते थे। वे सीनियर टेलर बन गईं और अतिरिक्त सिलाई से 100 रुपये और कमातीं। जब उनके पिता की नौकरी चली गई, तो वे परिवार की एकमात्र कमाने वाली बनीं। उन्होंने 40 रुपये में एक कमरा किराए पर लिया और परिवार को मुंबई बुला लिया। एक दुखद घटना में उनकी छोटी बहन की बीमारी से मौत हो गई, क्योंकि इलाज के पैसे नहीं थे। इसने उन्हें धन कमाने की प्रेरणा दी और वे 16 घंटे काम करने लगीं, एक आदत जो आज भी जारी है।

## व्यावसायिक यात्रा

1975 में महात्मा ज्योतिबा फुले योजना के तहत 50,000 रुपये का लोन लेकर उन्होंने एक बुटीक खोला और फर्नीचर का रीसेलिंग बिजनेस शुरू किया। वे उल्हासनगर से सस्ते फर्नीचर खरीदकर बेचतीं। व्यवसाय स्थिर होने पर, उन्होंने बेरोजगारों की मदद के लिए एक एसोसिएशन बनाई। 1995 में, उन्होंने एक विवादित जमीन ख़रीदी, जिस पर दो साल मुकदमा चला, लेकिन जीत हासिल की। फिर एक बिल्डर के साथ साझेदारी में 35 प्रतिशत लाभ पर विकास किया, और रियल एस्टेट में प्रवेश किया। 1998 तक, उनका रियल एस्टेट टर्नओवर 4 करोड़ रुपये पहुंच गया। उन्होंने गन्ने की फैक्ट्री में निवेश किया और कई कंपनियां स्थापित कीं, जैसे कमानी स्टील री-रोलिंग मिल्स, कमानी ट्यूब्स, कल्पना सरोज एंड एसोसिएट्स, कल्पना बिल्डर्स एंड डेवलपर्स, सैकृपा शुगर फैक्ट्री, और केएस क्रिएशन्स फिल्म प्रोडक्शन। उनके कुल बिजनेस टर्नओवर हजारों करोड़ रुपये है।

## कमानी ट्यूब्स का पुनरुद्धार

2000 में, कल्पना के पास व्यक्तिगत संघर्ष, उद्यमिता और ब्लू-कॉलर वर्कर्स की फाइनेंस का अनुभव था। 2001 में, दिवालिया कमानी ट्यूब्स के वर्कर्स ने उनकी एनजीओ से मदद मांगी। कंपनी पर 116 करोड़ रुपये का कर्ज था, 140 मुकदमे थे, और उपयोगिताएं बंद थीं। कल्पना ने सीईओ बनकर कर्ज चुकाए, मशीनरी बदली, उत्पादन शुरू किया, और कंपनी को लाभदायक बनाया। यह भारत की पहली कंपनी थी जहां सुप्रीम कोर्ट ने मालिकाना हक वर्कर्स यूनियन को सौंपा था। आज कंपनी 750 करोड़ रुपये की है।

## सामाजिक कार्य

कल्पना ने एक छोटी एनजीओ शुरू की, जो वंचितों को सरकारी लोन और योजनाओं की जानकारी देती है। उन्होंने कल्पना सरोज फाउंडेशन स्थापित किया, जो सामाजिक कल्याण कार्य करता है। वे दलित समुदाय की मदद करती हैं, बेरोजगारों को सहायता प्रदान करती हैं, और महिलाओं के सशक्तिकरण पर जोर देती हैं। वे भारतीय महिला बैंक के बोर्ड मेंबर भी रहीं। वे भारतीय महिला बैंक के बोर्ड मेंबर रहीं और भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) बैंगलोर के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स में शामिल हैं। एक बौद्ध अनुयायी के रूप में, वे डॉ. भीमराव अंबेडकर से प्रेरित हैं और महिलाओं के सशक्तिकरण पर ज़ोर देती हैं।

## पुरस्कार और सम्मान

2013 में, उन्हें ट्रेड एंड इंडस्ट्री के क्षेत्र में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। वे विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त उद्यमी हैं, और भारत सरकार ने उन्हें भारतीय महिला बैंक के बोर्ड में नियुक्त किया।

## वर्तमान स्थिति

आज 60 के दशक में होते हुए भी, कल्पना सक्रिय रूप से अपने व्यवसायों का नेतृत्व करती हैं। उनकी कहानी साबित करती है कि कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उनका दर्शन है, ''कड़ी मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। जो आप चाहते हैं, वह आपको मिलेगा अगर आप पूरे मन से काम करें और एकाग्रचित्त होकर लक्ष्य की ओर बढ़ें।'' कल्पना सरोज की जीवन गाथा लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो दिखाती है कि विपरीत परिस्थितियों से उबरकर सफलता कैसे पाई जा सकती है।

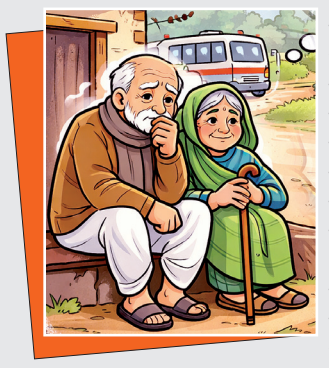

---

# एक खत के जरिए छलका पलायन का दर्द



प्रिय भाई, मैं आशा करती हूं कि तुम अपने परिवार के साथ दिल्ली में कुशलता से और प्रसन्न होगे। पिछले दिनों धुमाकोट के पड़ोसियों से पता चला कि मां जी और बाबूजी दोनों का स्वास्थ्य इन दिनों ठीक नहीं चल रहा है। आसपास के लोग यथासंभव उनकी देखभाल कर रहे हैं। मैं पीरुमदारा में रहते हुए भी बराबर उनका हाल-चाल लेती रहती हूं, फिर भी मन आशंकित रहता है। तुम्हें भी उनकी तबीयत के बारे में जानकारी लेते रहना चाहिए और समय निकालकर उनसे फोन पर बात किया करो। यह बात मैं पहले भी कह चुकी हूं। इस वर्ष पहाड़ों में अधिक वर्षा के कारण मौसम कुछ ज्यादा ठंडा हो गया है और आने वाले दिनों में ठंड और बढ़ेगी। पिताजी को कफ की शिकायत रहती है, खासकर जाड़े के दिनों में, जिससे उनका अस्थमा बढ़ जाता है। वहीं वात रोग के कारण मां जी के दाहिने घुटने में सूजन आ गई है। मेरा मन नहीं माना और मैं उन्हें देखने गांव पहुंच गई। मुझे देखकर मां जी और बाबूजी की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने भावुक होकर कहा, "बेटी, तुम हमारा कितना ख्याल रखती हो। भावेश दिल्ली जाकर बस गया है, अब हमारा हाल-चाल भी नहीं लेता।" यह सुनकर मेरा हृदय बहुत व्यथित हो उठा। तुम्हारा दूसरा भाई सुनील निजी कंपनी में काम करने के कारण नोएडा में अत्यधिक व्यस्त रहता है। पिछले वर्ष गांव में पूजा के अवसर पर वह बहुत कम समय के लिए ही आ पाया था। आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि गांव में मां-बाबूजी की देखभाल कैसे हो और कौन करे। इस विषय पर मैं लगातार सोचती रहती हूं। मैंने जीजा जी से बात की तो उन्होंने सुझाव दिया कि मैं मां-बाबूजी को पीरुमदारा ले आऊं, पर बात इतनी सरल नहीं है। गांव में हमारा पुश्तैनी मकान और दो नाली जमीन है। मैंने कई बार मां-बाबूजी से कहा कि वे मेरे साथ पीरुमदारा चलकर रहें। एक बार बहुत समझाने पर उन्हें यहां ले भी आई, लेकिन उनका मन नहीं लगा और वे वापस गांव लौट गए। अब स्थिति पहले जैसी नहीं रही। दोनों ही कमजोर हो चुके हैं। उनके स्वास्थ्य, खान-पान और दवाइयों का नियमित ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह लिखते हुए मेरा मन बहुत भावुक हो रहा है कि तीन संतानों के माता-पिता बुढ़ापे में आज अकेले जीवन काट रहे हैं। पड़ोस की सरुली ताई बताती हैं कि वे रामनगर की ओर से आने वाली हर बस को उम्मीद भरी निगाहों से देखते हैं, शायद भावेश या सुनील आ रहे हों। तुम जानते हो कि मेरी शादी को बारह वर्ष हो चुके हैं और मैं अपने परिवार व बच्चों की जिम्मेदारियों में भी बंधी हूँ। कोविड काल में सासू मां के निधन के बाद मेरे ससुर जी अकेले पड़ गए हैं। उन्हें शुगर और बीपी की समस्या है। इसके बावजूद उन्होंने स्वयं कहा कि मैं धुमाकोट जाकर अपने माता-पिता के साथ कुछ दिन रह आऊं। मैं केवल यही चाहती हूं कि अम्मा-बाबूजी का शेष जीवन सम्मान और सुकून के साथ बीते। तुम आर्थिक रूप से सक्षम हो और माता-पिता के त्याग व संघर्ष को भली-भांति समझते हो। उन्होंने कभी बेटा-बेटी में भेद नहीं किया। इसलिए गांव में लोग कहते हैं कि "राधिका पटवाल जी का तीसरा बेटा है।" इन सभी बातों पर गंभीरता से विचार करना और मेरे इस पत्र का उत्तर देना।



संतोष कुमार तिवारी
नैनीताल

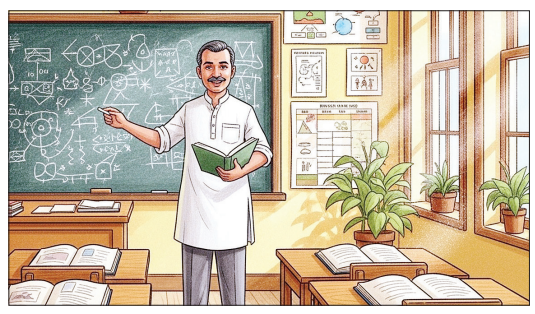

---

जॉब का पहला दिन

# जिम्मेदारी की दहलीज पर पहला कदम



20 दिसंबर 2010 का दिन था, जब मुझे पहली बार स्थायी तौर पर अपनी प्रथम नियुक्ति के विद्यालय प्राथमिक विद्यालय जाहिदपुर, शाहबाद, रामपुर में जाना था। मेरा जन्मदिन 24 दिसंबर को होता है। इस प्रकार से दिसंबर में सरकारी सेवा में आना एक प्रकार से जन्मदिन के पूर्व उपहार जैसा था। मैंने जीवन में कभी कोई ट्यूशन तक नहीं पढ़ाई थी। बस बीएड और विशिष्ट बीटीसी के प्रशिक्षण के दौरान, जो शिक्षण अनुभव था वही था। ऐसे में जब पहली बार विद्यालय पहुंचा, तो वास्तविक परिस्थितियां किताबी ज्ञान से अलग और चुनौतीपूर्ण थीं।

इन परिस्थितियों ने मुझे जहां जीवन की सच्चाइयों से रूबरू करवाया, मुझे तपाया वहीं मुझे मजबूत भी किया। विद्यालय में बिताया गया हर एक पल मेरे अनुभव को पुख्ता कर रहा था। मैं धीरे-धीरे इन चुनौतियों से लड़ना और मुस्कराकर हर समस्या का हल ढूंढना सीख गया। परिषदीय विद्यालयों में होने वाली दैनिक प्रार्थना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे' ने मुझे बहुत हिम्मत प्रदान करी। जब इस प्रार्थना को प्रतिदिन सुनता था। तब मन में एक ही बात आती थी कि 'हम दीन दुखी निबलों विकलों के सेवक बन संताप हरें' क्योंकि इस राह पर चलेंगे तभी तो 'उनको तारें खुद तर जावें' वाली पंक्ति सत्य सिद्ध होगी। पदोन्नति के बाद 2016 में बरेली में स्थानांतरण भी हो गया। 2016 से अब तक मैं उच्च प्राथमिक विद्यालय रहटुइया, मझगवां, बरेली में कार्यरत हूं। रामपुर में मैं कक्षा 1- 5 तक के बच्चों को पढ़ाता था, तो यहां कक्षा 6 से 8 के बच्चों को शिक्षित करने लगा और इनमें प्रतियोगिता की भावना का संचार किया। परिणामस्वरूप वर्ष 2023 और 2025 में राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति जैसी कठिन प्रतियोगिता में विद्यालय से छात्र सफल हुए और 2026 में भी दो छात्रों के सफल होने की संभावना है। विद्यालय और बच्चों से मुझे इतना प्रेम है कि 2024 में 'भूतिया मास्साब' नाम का उपन्यास लिखा है जिसमें एक ऐसे अध्यापक की कहानी है जो मृत्यु के बाद भी भूत के रूप में अपने बच्चों की सहायता करते रहते हैं। हिन्दी फंतासी जो लगभग अछूता क्षेत्र है उसमें मैं 'हाथिस्तान' नाम की शृंखला लिख रहा हूं।

प्रांजल सक्सेना
शिक्षक, बरेली